Reg. No. | | | | | | | | | | | |

B.M.S COLLEGE FOR WOMEN, AUTONOMOUS
BENGALURU – 560004
SEMESTER END EXAMINATION – JANUARY/FEBRUARY 2023

B.Com - I Semester
Hindi-Language

GADYA BHANDAR AUR VYAKARAN
(NEP Scheme 2021-22 onwards F+R)

Course Code: COM1AECHIN01 **QP Code: 1113**
Duration: 2 ½ Hours **Max. Marks: 60**

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में लिखिए। (10x1=10)

1. प्राचीन भारत में ऋषिगण कहाँ रहते थे ?
2. विलायती कपड़ों की भिक्षा कौन माँग रहे थे?
3. गिल्लू का प्रिय खाद्य क्या था ?
4. सलीम अली ने अपनी आत्मकथा का नाम क्या रखा था?
5. बाँकेलाल को किसके प्रति अजीब सा प्यार उमड़ आया था?
6. किसके आग्रह से विनोद आगरा आया था?
7. शुक्ल जी के साथ आए बाबूसाहब कौन थे?
8. गिरगिट झाड़ी में जाकर क्या निगलकर आया था?
9.' ठेले पर हिमालय 'यात्रा वृत्तांत के लेखक कौन है?
10. बांकेलाल कितने साल सरकारी विभाग में कार्यरत थे?

II. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्ही <u>दो</u> का संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (2x7=14)

1. "जब भी दो जातियाँ मिलती हैं, उनके सम्पर्क या संघर्ष से ज़िंदगी की एक नई धारा फूट निकलती है।"
2. "बचपन के दिनों में, उनकी एरगन से घायल होकर गिरनेवाली नीलकंठ की वह गौरय्या सारी ज़िंदगी उन्हें खोज के 'नए-नए' रास्तों की तरफ़ ले जाती रही।"
3. "बादल धीरे-धीरे नीचे उतर रहे थे और एक-एक कर नए-नए शिखरों की हिम-रेखाएँ अनावृत हो रही थीं।"

BMSCW LIBRARY

III. किसी <u>एक</u> पाठ का सारांश उसकी विशेषताओं के साथ लिखिए। **(1x16=16)**

1. गिल्लू ।
2. बीमार का ईलाज।

IV. व्याकरण (किन्ही <u>दो</u> प्रश्नों का उत्तर लिखिए।)

(2x5=10)

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए।

a) अपना उल्लू सीधा करना ।
b) अंगार बरसाना ।
c) घोड़े बेचकर सोना।
d) अंधेरे घर का उजाला।
e) आँखें चार करना।

2. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ लिखिए।

a) जीभ और थैली को बंद ही रखना अच्छा हैं।
b) जेठ के भरोसें पेट।
c) जैसा तेरा ताना बाना वैसी मेरी भरनी।
d) जेते जाग में मनुज हैं तेते अहें।
e) जैसा देश वैसा वेश।

3. वाक्य विश्लेषण किसे कहते हैं? उसके कितने प्रकार हैं?

V. निम्नलिखित अनुच्छेद में उपयुक्त स्थानों पर विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए । **(10)**

जीवन की तुलना एक प्रवाहमान नदी से की जा सकती है जिस प्रकार एक सरिता अविरल बहती रहती है समुद्र में लहरे सदा गतिशील रहती हैं वायु एक क्षण के लिए भी नहीं रुकती सूर्य चन्द्रमा तारे सभी अपने-अपने नियत समय पर उदित एवं अस्त होते हैं ठीक उसी प्रकार जीवन की गति भी अविरल है समय के साथ-साथ आगे बढ़ते रहने की प्रबल मानवीय लालसा ही जीवन है इस अविरल गति से प्रवाहमान जीवन में अनेक ऊँचे-नीचे रास्ते आते हैं अनेक बाधाएँ आती हैं इन्हीं बाधाओं से संघर्ष करते हुए जीवन आगे बढ़ता रहता है यही कर्म है यही सत्य है

*****

BMSCW LIBRARY